नयी चिकित्सा आयाम मानव स्वास्थ्य कल्याणार्थ हेतु

World Father of MHRS Mr. Gyanee Das Manikpuri

M.A., M.S.W., M.D., P.G.D.Y.T., ph.d

(अन्तर्राष्ट्रीय गोल्ड मेडिलिस्ट, शोधकर्ता, सामाजिक कार्यकर्ता, योगा साइन्स, सी.आर.ओ.– सदस्य (भारत)

संचालक– **MARYC, अध्यक्ष – MAHE-S**

पंजीयन क्र. – 17991, (छत्तीसगढ़)

– MHRS - (MID HEAD ROUT SOLUTION)

– अष्टांग योग मेडिटेशन

* मेडिटेशन द्वारा ध्यान आकर्षण प्रभाव शक्ति बढ़ाना, मन मस्तिष्क व आत्म शान्ति प्राप्त करना।
* मेडिटेशन द्वारा मोक्ष मार्ग प्रसस्त होना।
* मेडिटेशन द्वारा आत्मविश्वास बढ़ाना।
* मेडिटेशन द्वारा लक्ष्य प्राप्त करने का सरल उपाय।
* मेडिटेशन द्वारा स्वास्थ्य लाभ हेतु उत्तम प्रावधान है।
* समाजिक व पारिवारिक जीवन में विशेष योगदान होता है।

MHRS - अनुवांसिक प्रभाव (DNA, RNA)

(1) रोग
(2) चेतना शक्ति
(3) गुणात्मक प्रभाव
(4) कार्य प्रणाली।
(5) विश्वसनियता
    1. अच्छा 2. बुरा
(6) क्षमता
    1. समान्य
    2. असामान्य

MHRS- यूवा वर्गो में प्रभाव –

1. आत्म विश्वास बढ़ना
2. संस्कारिक गुणों का विकास
3. ज्ञान प्राप्त में सहायक
4. ध्नोपाज्रन में सहयोगी
5. रूढ़ीवादिता को सही दिशा प्रदान करना।
6. पारम्परिक रिवाजों पर विशेष बल।
7. सामाजिक बुराईयों को दूर करना।
8. पश्चिमी सभ्यता पर विशेष सूझाव।
9. सभी भाषाओं की उपयोगी व महत्व।
10. प्रसिद्ध वैज्ञानिको की मार्गदर्शन करना।
11. प्राचिन ऋषि मुनियों की तपस्या व ऊर्जा की प्रभावकारी महत्व।
12. हजारो वर्ष छिपी हुई रहस्यमय की जानकारी देने का प्रयास करना।
13. **MHRS** द्वारा स्वयं पर प्रकृति अलौकिक शक्ति का प्रभाव को अवगत करना।

MHRS द्वारा जीवन पर प्रभाव –

* मानव शरीर की गतिविधियों की आन्तरिक व बाह्य जानकारी प्राप्त करना।
* स्वास्थ्य लाभ के क्षेत्र में बदलाव कर उचित दिशा प्रदान करना।
* स्वास्थ्य शिक्षा प्रणाली में विशेष सूधार कराना।
* आधुनिक सर्जरी में विशेष सूधार करना।
* दवाईयों की दुषप्रभाव से बचाना।
* रोगीयों को सर्जरी से बचाना।
* आम नागरिकों को रोग (बिमारियों) से बचाना।

MHRS - द्वारा सरलतम जीवन का रास्ता व महत्व प्रदान करना :–

1. स्वस्थ्य व सून्दर मानव शरीर का विकास।
2. स्वच्छ व सूविचार जागृत करना।
3. संस्कारी बनाना।
4. आत्मचेतना बढ़ाना।
5. सांसारिक दुष्प्रभाव से बचाना।
6. ज्ञान प्राप्ति का मार्ग प्रसस्त करना।
7. धनोपार्जन हेतु दिशा निर्देश देना।
8. प्राकृतिक प्रदत्त ऊर्जा (शक्ति) का महत्व व उपयोगिता बताना।
9. रूढ़ीवादियों से बचना।
10. पारंम्परिक प्रभाव का रहस्य को जानना।
11. आनुवंशिक गुणों का महतव को समझना।
12. निराशी जीवन को बदलना।
13. क्रोध/ईर्ष्या को शान्त कर सिघ्र सफलता प्राप्त करने का सरलत उपाय बताना।
14. शिक्षा व रोजगार में सक्षम बनने हेतु मार्गदर्शन।
15. सूविचार भाव, वचन, संयम, जागृत करना।

MHRS - द्वारा कार्य प्रणालीयां :–

1. मानव शरीर की स्वास्थ्य रक्षा कर दीर्घायू प्रदान करना।
2. भविष्य में होने वाली घातक, असाध्य, जानलेवा, बिमारियों को रोकना।
3. आम नागरिकों को स्वास्थ्य परिक्षण कर जानकारी व उचित, परामर्श देना।
4. महंगी दवा व सर्जरी से बचाना।
5. मानव शरीर को स्वास्थ्य स्वच्छ रखना।
6. प्राकृतिक वातावरण निर्मित करना।
7. प्राकृतिक प्रकोप व दोषों से बचने का उपाय।
8. माहामारियों से बचने का सलतम उपाय।
9. राष्ट्रीय व अन्तर्राष्टीय स्तर पर कार्यक्रमों का संचालन करना।
10. मानव शरीर की आन्तरिक व बाह्य गतिविधियों की शुद्धिकरण करना।
11. सभी ग्रंथीयों को संतुलन बनाने में सहयोग करना।
12. सभी अंगो को शक्ति प्रदान करना।
13. शरीर में रक्त प्रवाह व शुद्धिकरण को निस्तर बनाय रखने में सहायता करना।
14. अलौकिक शक्ति का प्रभावकारी व महत्व को बताना।
15. शरीर निर्माण का उद्देश्य व प्रक्रिया बताना –

    (1) निज घर (सतलोक)

    (2) जिव आत्मा –
        1. एक (मानव शरीर)
        2. अनेक (कोशिकाए)

    (3) प्रकृति प्रभाव –
        1. अनुवांसिक गुणों द्वारा
        2. रोगों के अनुसार
        3. अंगों के अनुसार
        4. संस्कार के अनुसार
        5. धर्म के अनुसार
        6. जाति (कर्म) के अनुसार
        7. समाज के अनुसार
        8. परम्परा के अनुसार
        9. मोक्ष प्राप्ति (कर्म, संस्कार) के अनुसार

    (4) पंच तत्व :–

1. आकाश
2. अग्नि
3. वायू
4. जल
5. पृथ्वी
(वनस्पति वातावरण)

(5) धातु का प्रभाव –

* रस, रक्त, मास, मेथ, अस्थि मच्जा, शुक्र

(6) रक्त का प्रभाव –

* **O, A, B, AB (+)** (ग्रुप)
* **O, A, B, AB (-)** (ग्रुप)

(7) अग्नि – का प्रभाव

1. सामान्य – अग्नि / (पचय)
2. मन्द – अग्मि / (रोग)
3. तीव्र – अग्नि / (भूख लगना)

नोट :– यदि मानव शरीर में किसी भी प्रकार की तत्वों की उपलब्धता व मात्राएँ सामान्य से कम या ज्यादा होने पर शरीर में उपस्थित तरल दृव्यों व पदार्थो को शरीर में उपस्थित कोशिकाओं द्वारा चुरा लिया जाता है जिसकी भरपाई करना मुश्किल हो जाता है व भविष्य में अन्य बिमारिया उत्पन्न व जन्म होने लगता ळें इसे हल्के में न ले मानव शरीर व जीवन दोनों दी शब्द अनमोल है।

(8) रक्त की विशेषताएँ व गुण :–

01. यह एक अनोखी चिज है जिसे आज तक किसी विद्वान, वैज्ञानिक, तकनिकी यंत्रों ने नहीं बना पाया इसके पिछे क्या राज हो सकती है सोचे। यह रहस्यमय है।

''यह प्रकृति का चमत्कार ही है जो सभी को अपनी नग्न आखों से दिखाई देता है। परंतु यह सर्वोपरी अनमोल है इसके बिना मृत्यु निश्चित है।(चाहे रोग हो या न हो)''

02. ब्लड ग्रुप किसी जाति व धर्म की नहीं फिर भी लड़ाई क्यो, भेदभाव, छुआछुत, उच्चनिच, अहंकार, गृणा, ईष्या, दंगे, प्रताड़ना जैसे सभी असामाजिक तथ्य व घटनाएँ क्यो।

''यह एक रहस्य है।''

(9) वायू की उपयोगिता व रहस्य :–

01. यह अदृष्य है लेकिन सचमुच प्रकृति की चमत्कार है।
02. यह प्रकृति प्रदत्त निः शुल्क है।
03. इसके बिना भी एक छड़ जिना मुस्कील है।
04. सभी मनुष्य को वायू प्रकृति द्वारा गिन कर दिया गया है।
05. मृत्यु होना तो एक बहाना है।
06. एक दिन तो जाना ही है सभी को फिर अहंकार क्यो।
07. यह छिपा हुआ रहस्य है हम सभी इसे महसूस करते है? पकड़ नहीं सकते सिर्फ किसी साधन व माध्यम से रख ही सकते है।
08. इसमें इतनी शक्ति होती है यह महा प्रलय व विनाश भी संसार को छड़ भर में ही समाप्त कर सकती है।
09. प्रदुषित वातावरण से अनेको बिमारियों उत्पन्न हो रही है।

जैसे :–घर में रखी हूई व बन्द बोतल में पानी भरी हुई खराब होने लगती है। यह वायु की कमी के कारण होती है –

1. रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी।
2. घातक श्वसन बिमारियां।
3. तेज गर्मी।
4. वर्षा कम होना।
5. मांसपेशिया कमजोर व लचिला होना।
6. नवजात शिशू विकलांग होना।
7. फेफड़े की बिमारिया।
8. हृदय रोग शिशुओं में ज्यादा होना।
9. मानसिक विकलांग पैदा होना।
10. मानव शरीर को शुद्ध वायू मिलता रहे अन्यथा शिघ्र ही विकृतियां उत्पन्न होने लगेगी।

उद्देश्य :– शरीर निर्माण

मुझे लगता है कि परब्रह्म सतपुरूष द्वारा प्रकृति का स्थाई पूर्वक, संचालन, विकास, गुण, कार्य, क्रियाएँ, प्रभाव, उपयोगीता, निश्चितता, एकाग्रता, ऊर्जा, तत्वों, द्रव्यों, पंच तत्वो, मोछ, पाप, पुण्य, अन्य उपयोगी, खनिज पदार्थो, जल, वायू, अग्नि, आकाश, मिट्टी, चुम्बकीय गुण, चेतना, मन, आत्मा व अन्य सभी वाच्छिक क्रियाओं को सूचारू रूप से प्रतिपादित व नियंत्रित, संचालन, प्रभाव आदि कार्यो को सही दिशा में विस्तार हेतु परब्रह्म सतपुरूष को मानव शरीर निर्माण करने की आवश्यता पड़ी। जो एक एकाई तन्त्रों द्वारा सम्पादित व सभी कार्यो को संचालन व उद्भव सम्भव हो सके। एसी अवधारणा यूक्त प्रकृति पुरूष द्वारा मानव शरीर निर्माण की आवश्कता पड़ी।

जिससे यह काल्पनिक द्वारा सत्यता पूर्वक प्रकृति द्वारा प्रतिपादित ऊर्जा स्वरूप व दीर्घायू सुन्दर व स्वस्थ, स्वच्छ निः स्वार्थ मानव शरीर का निर्माण कर एक प्रकार से कृतज्ञ किया गया व आज हम सभी मानव शरीर रूपी काया को धारण किये हुये है।

जिसे हम सभी पंच तत्वों से निर्मित शरीर कहते है। जिसमें कई ऐसे प्रकृति प्रदत्त चमत्कारी शक्तिया विद्यमान है जिसकी रहस्य जानना जरूरी है।

प्राचिन महर्षि, ऋषि मुनियों ने अपनी वर्षो तपस्या, ध्यान, समाधि से यह सच्चाई सिद्ध कर दिखाया है कि मानव शरीर एक एकाई तन्त्रो द्वारा घिरा व संचालित होता है।

जिससे मानव शरीर एक श्रृंखला में विस्थापित व निरूपीत है जो एच्छिक व अनैच्छिक गतिविधियों कार्यो द्वारा प्रतिपादित, संचालित व नियंत्रित है।

यहि सही मायने में शरीर निर्माण का मुख्य व पूर्ण उद्देश्य है।

जैसे –

01. मानव जीवन अद्भुत व अनमोल है जिसमें अच्छे कार्यो की प्रधानता निर्मित है।
02. पाप पुण्य का लेखा–जोखा होता है व कर्म के अनुसार पुनर्जन्म व भोग विलास निहित होती है।
03. मानव जीवन मोक्ष प्राप्ति का माध्यम है।
04. अच्छे कर्म से मोक्ष प्राप्त निश्चित होता है।
05. परिवारिक जिवन हेतु उत्तम माना जाता है।
06. सामाजिक कार्या का संचालन होता है।
07. मानव शरीर की रहस्य की जानकारी प्राप्त होती है।
08. प्राकृति विकाश व ऊर्जा शक्ति की ज्ञान होती है।
09. शरीर निमार्ण की इकाई है (कोशिका, उत्तक, अंग, संरचना, आकृति (मानव शरीर))
10. स्त्री–पुरूष निर्माण कर नई संसार का निर्माण मुख्य उद्देश्य हैं
11. मानव जीवन प्रदान करना प्रकृति की मुख्य उद्देश्य है।

MHRS :- वायुमण्डलिय ऊर्जा व मानव जीवन पर उपयोगिता

वायु मण्डलिय ऊर्जा : – इसका तात्पर्य है कि संपूर्ण ब्रम्हाण्ड में स्थाई रूप से गतिमान ऐसी संरचना विद्यमान है जिसके द्वारा पंच तत्वों से निर्मित मानव शरीर, वनस्पति जगत अन्य प्राणी जगत जैसे–जल, थल, आकाश, पाताल (भू–गर्भ) व अन्य सभी जीवित प्रार्थिणों से है जिसमें जीवन संभव होता है। चाहे कम या ज्यादा उन सभी पर मुख्य रूप से वायुमण्डलीय ऊर्जा स्रोत की विशेषताएँ विद्यमान होती है व सभी दैनिक जीविकोपार्जन कार्य संपादित व कार्योनवित नियमानुसार स्थाई व अस्थाई पूर्वक विस्तार व विकास संभव होती है। यह कार्य सिर्फ वायुमण्डलीय ऊर्जा द्वारा ही संभव है इसका नियंत्रण प्राकृतिक रूप से विद्यमान ऊर्जा से होती है इसलिए इसे वायुवण्डलीय ऊर्जा कहते है। ऊर्जा हम सभी के चारो ओर विद्यमान है। इसके बिना जीवन संभव नहीं है। जैसे

1. मानव शरीर को वायु एक छड़ न मिले तो शीघ्र ही मृत्यु निश्चित है।
2. वायु बिना जीवन संभव नहीं है।
3. तपस्वि कई वर्षो बिना भोजन किये समाधि में लीन रहते है यह कार्य वायुमण्डलीय ऊर्जा द्वारा होती है।
4. वनस्पति जगत वायूमण्डलीय ऊर्जा द्वारा ही वर्षो जीवित रहती है व वायुमण्डलीय ऊर्जा की कमी से नष्ट हो जाती है।
5. महामारी रोग वायुमण्डल से ही उत्पन्न होती है।
5. पेड़–पौधों में फलने फुलने की कार्य वायूमण्डलीय ऊर्जा से होती है। सभी यांत्रिक व तकनिकी उपकरणों का प्रचलन व कार्य वायुमण्डलीय ऊर्जा से होती है।

जैसे – टावर व नेटवर्किंग

7. ऋतु चक्र वायुमण्डलीय ऊर्जा द्वारा होती है।
8. संसार में मानव काला, गोरा, बौनापन, लम्बा। यह भेद वायूमण्डलीय से है।
9. सूक्ष्म जीव वयुमण्डलीय ऊर्जा से जिवित होती है।
10. इन्द्रधनुष्य का रहस्य वायूमण्डलीय ऊर्जा से है जिसे 7 रंगो से जाना जाता है।
11. चुम्बकीय शक्ति का गुण उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव का संकेत व रूकना वायुमण्डलीय ऊर्जा से होती है।
12. मानव शरीर में वायुमण्डलीय ऊर्जा विद्यमान होती है। आप रेडियों को पहाड़ो व रेंज से बाहर छुने से आवाज साफ सुनाई देती है यह वायूमण्डलीय ऊर्जा है जिससे ज्ञात होता है कि मानव शरीर एरियल की भाती कार्य करती है।
13. ग्रह नक्षत्रों व उपग्रहों मे वायूमण्डलीय का प्रभाव होता है।
14. भविष्यवाणी व कुण्डलिनी ज्ञान वायुमण्डीय ऊर्जा से होती है।
15. योगा साईंस का प्रभाव वायुमण्डीय ऊर्जा से होती है।
16. रोगी को खुला व साफ स्थान में रखने से जल्द ही स्वास्थ्य में सुधार होने लगता है।
17. हवाई सफर जिन्दा–जागता हुआ प्रमाण है। जिसमें वायूमडलीय ऊर्जा को महसूस व अनुमान लगाया जा सकता है। कि वह बिना रास्ता का हवाई सफर कैसे होती है यह रहस्य वाली बात है।
18. पक्षी के पैरो में इलेक्ट्रीक करेन्ट क्यो नहीं लगती है वह खुली भोल्टेज वाली तार में बैठती है, व मनुष्य तार को छुने से मर जाता है।
19. गंगा जल मैला क्यों नहीं होता है। यह वायुमण्डलीय ऊर्जा की देन व रहस्य है।
20. मानव व पौधों को एक दूसरे का पूरक इसलिए मानते है क्योकि यह गुण ही वायूमण्डलीय ऊर्जा में विद्यमान ऑक्सीजन **(O_2),** कार्बन डाई ऑक्साइड **(Co_2)** होती है यह रहस्य की बात है।
21. वायू दिखाई क्यो नहीं देती है यह रहस्य वायूमण्डलीय ऊर्जा से है।
20. बम विस्फोट की कार्यप्रणाली वायुमण्डलीय ऊर्जा से ही फैलती है।

मानव जीवन व प्राणियों पर उपयोगिता

1. वायूमण्डलीय ऊर्जा सर्वव्यापि मान है हम सभी जीव प्रार्णियों के लिए अति उपयोगी है।
2. संसार की सभी कार्य इसके बिना असंभव है।
3. इसे दूषित होने से बचाना हम सभी की दायित्व है। नहीं तो मानव व प्राणि अपनी मूल स्वरूप को विलुप्त हो जायेगे।
4. योगा साइंस में विशेष उपयोगिता है जिससे सिद्धिया, मंत्रजाप, समाधि व मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रसस्थ होती है।
5. वैज्ञानिक तर्क पर आधारित सभी संसाधनों में अति उपयोगी है।
6. वनस्पति जगत में विशेष उपयोगी वरदान स्वरूप प्रतिदिन भोज्य पदार्थो के अनुरूप प्राप्त होती है।
7. पंच तत्वों के बिना मानव शरीर छड़ भर में समाप्त हो जायेगी।
8. भविष्य वाणियों में विशेष महत्व एवं उपयोगिता रहस्यमय है।
9. दूर संचार प्रणालियों में भी प्रमुख स्थान बनी हुई है।
10. प्राकृति को निरंतर गतिमान बनाये रखने में विशेष उपयोगिता निहित है।

मानव शरीर क्या है ?

इसका तात्पर्य है कि मानव शरीर की निर्माण, आंतरिक व बाह्य क्रिया कलापो, विकास, ऊर्जा, प्राकृतिक प्रदत्त शक्ति व अन्य सभी मानव शरीर में निहित है जिन्हे जानना सभी को जरूरी है। ताकि सभी मानव सम्प्रदाय सुचारू रूप से अपनी दैनिक व अनमोल जीवन को सुखि व आनंदमय पूर्वक व्यतित कर सके। इस उद्देय आशा के साथ **MHRS** (मीड हेड रूट सोल्युशन) द्वारा निराश रोगियों के लिए आखरी समाधान व उपाय की दृष्टि से समझाने का प्रयास किया जा रहा है। जिससे संपूर्ण मानव जीवन में सुख व निरोगी काया स्थाई व दिर्घायु बनी रही व युवा वर्गो को गंभीर व अनुवाशिंग अशाध्य बिमारियों से बचाया जा सके, भविष्य में होनी सभी जानलेवा बिमारियों व महगी दवाई, सर्जरी से बचाया जा सके, जिससे मानव शरीर शक्तिशाली बनी रहे।

दोस्तो ज्ञात है कि मानव शरीर की सही–सही जानकारी अभी तक किसी ऋषिमुनि व वैज्ञानिकों ने स्पष्ट पूर्ण रूप से बताने में अस्मर्थ है। इसकी रहस्य जानना कोई बच्चों का खेल नहीं है। यह मानव शरीर अद्भूत व चमत्कारी, ऊर्जावान व विशेष गुणों व प्राकृतिक रूप से निर्मित है। जिसका नित्रंणकारी किसी व्यक्ति का वस्तु से नहीं है। मानव शरीर सृष्टि निर्माण से ही अपने आप में सक्षम व परिपूर्ण व रहस्यमय निर्मित है।

सभी यूगों, वेदो, ग्रन्थो, उपनिषदो से हमें कुछ जानकारिया प्राप्त होती आ रही है। जिसे गहन अध्ययन व तर्क की दृष्टि से ज्ञात होता है कि प्राचिन ऋषि, महर्षि, संत महात्माओ, तपस्वियों से ज्ञात होता है कि मानव शरीर में सभी प्रकृति गुण व रहस्य विद्यमान है। व शिक्षा की दृष्टि से हमे कुछ समझाने व जानने की रास्ता अनुभव के आधार पर दिशा निर्देश दिये है।

जिससे ज्ञात होता है कि मानव शरीर पंच तत्व से मिलकर बना है जैसे – आकाश, अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी इन सभी तत्वो को मूल अंश मानव शरीर में उपस्थित होती है। जिससे ज्ञात होता है कि मानव शरीर में ऐसी रहस्यमयी विद्यमान है जिसमें से एक रहस्यमय ज्ञान **MHRS** जनक स्वरूप श्री ज्ञानी दास मानिकपुरी (प्राकृतिक चिकित्सा एक्युप्रेसर विशेषज्ञ, शोधकर्ता, सामाजिक कार्यकर्ता, योगा साईंस, अंतराष्ट्रीय गोल्डमेडिलिस्ट) द्वारा यह बताया गया कि जैसे आयुर्वेद में वात, पित, कफ व अग्रेजी दवाओं में रोग प्रतिरोधक क्षमता व अन्य सभी प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति में अपना कुछ–कुछ उद्देश्य एवं विशेषताएँ निहित होती है जिससे ज्ञात होता है कि मानव शरीर में उपलब्ध तथ्यों की मात्राओं में कम या ज्यादा होना जिससे शरीर में वातावरण अनुसार अनुकुलन न होने पर अन्य विकृतिया उत्पन्न होती है जिसे बिमारी कहते है।

ठीक उसी तरह **MHRS** में बताया गया है कि मानव शरीर उल्टा वृक्ष की भाँती खड़ा व चलाएमान है जैसे वृक्ष की जड़े जमीन में स्थित होती है व सभी आवश्यक तत्वों व भोज्य पदार्थो की पूर्ति होती है व पौधो को आसानी से प्राकृतिक रूप से मिलती रहती है।

जैसे पृथ्वी में केशीकत्व नलिया पाई जाती है जिसमें पृथ्वी में उपस्थित सभी पदार्थो को पेड़ के जड़ों द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है व संपूर्ण पेड़ के तनो, पत्ते, फुल व फल तक आसानी से पहुचता रहता है तथा पेड़ पौधे हरे–भरे फुल व फल देते रहते है। समय अनुसार व दिर्घायु स्थित होते है। मनुष्य से ज्यादा दिर्घायु पेड़–पौधों का चक्र होता है। प्रजाति के अनुसार पेड़ पौधे वर्षो से जगलों में खड़े रहते है व सुन्दर वातावरण निर्मित करते है।

इस तरह मानव शरीर उल्टा वृक्ष के भाँति खड़ा व चलाएमान है वह प्राकृति प्रदन्त ऊर्जा शक्ति द्वारा जीवित व चलायेमान होती है।

जैसे – **MHRS**- जिसका अर्थ है मिड – मध्य, हेड–सिर, रूट–रास्ता, सोल्यूशन–आखरी उपाए व समाधान माध्यम कहा गया है।

जिससे ज्ञात होता है कि आज तक मध्य मस्तिष्क की अध्ययन मेडिकल साईंस में अभी तक नहीं हो पाई है इस दृष्टि से एक सरल माध्यम की खोज हो चुकी है जिसे **MHRS** नाम जनक स्वरूप श्री ज्ञानीदास मानिकपुरी जी द्वारा दिया गया है।

आज हम चिकित्सा शिक्षा की दृष्टि से समझने का प्रयास व माध्यम की जानकारी अपनी 15 वर्षो के अंतर्गत 20 हजार से ज्यादा आम नागरिको व निराश रोगियों को स्वास्थ्य लाभ देते हुए प्रमाणिक दृष्टि के तौर पर अपनी मेहनत व लगन से लक्ष्य प्राप्ति अनुसार मानव शरीर की रचना व संरचना की दृष्टि से ज्ञात होता है कि मानव शरीर का निर्माण पंच तत्वों के द्वारा हुआ है जिसमें कि कई गुणों व भाव रहस्य विद्यमान है जिसका नियंत्रण प्राकृतिक रूप से होता रहता है व स्थाई रूप से सभी आंतरिक व बाह्य गतिविधिया निरंतर संचालित, जागृत, ऊर्जावान संचालन सभी कार्य होती रहती है।

मानव शरीर में असंख्य कोशिकाओं, उत्तको, संरचनाओं द्वारा शरीर निर्मित होती है। व माँसपेशियों व नसों, त्वचा, बाल, नाखुन ये सभी अपनी प्रमुख कार्यो में सहयोगी व मानव शरीर को आकृति प्रदान की प्रक्रिया गर्भ में जन्म तक व मृत्यु तक का कार्य प्राकृतिक रूप से होता रहता है।

अर्थात मानव शरीर की रचना आकृति की दृष्टि से **MHRS** द्वारा मूलभुत उद्देश्य अनुसार माना गया है। कि मानव शरीर में मस्तिष्क सबसे उपर क्यो होता है। यह रहस्यमय बात है।

इससे ज्ञात होता है कि शरीर में विभिन्न प्रकार की अनुभूतिया प्राकृतिक रूप से होती है।

जैसे :–

योगा साईस की दृष्टि से।

1. मन–बुद्धि, चिंत, आत्मा का विशेष महत्व व प्रभाव बतलाया गया है।
2. मोक्ष प्राप्ति का मार्ग अस्टांग योग को बताया गया है।
3. तीन नाडिया 01.ईडा, 02. पिंगला, 03. सुषुग्ना।
4. विशेष नाडिया चित्राणी जिसे दुर्गा शक्ति स्वरूप माना जाता है।
5. कोमा व बेहोसी स्थिति में चित्राणी नाड़ी ही कार्यरत रहती है।
6. किसी तरह **MHRS** का मानना ळै कि मानव शरीर में भी उपयोगी पदार्थो व वस्तुओ की अधिकता व कमी न हो तो स्वास्थ्य सकुशल माना जाता है। यदि इसमें किसी प्रकार की असमानता व अनुकुलन्ता में भिन्नता पाई जाती हो तो निश्चित ही विकृति व बिमारिया मानव शरीर में उत्पन्न होने लगती है।

ठीक उसी प्रकार मानव शरीर में असंख्य नाड़ियों, मांसपेशियों में किसी कारण चोट लगना, दुर्घटना, प्राकृति आपदाए, व गरिष्ठ भोजन ग्रहण करना जिससे **GIT** (गेस्टो इनटेस्टीन ट्रेक्ट) में अवशिष्ट पदार्थो का बाहर न निकलना जिसके कारण मानव शरीर की शुद्धिकरण न होना व शरीर में विजातिय द्रव्यों का बाहर न निकला जिससे हार्मोन, पाचकरस, व उपसर्जन कार्य व अन्य उपयोगी बाह्य व आंतरिक कार्य प्राकृतिक प्रणालीयो में रूकावटे या अवधेरा पैदा होना शुरू होता है जिससे सही समय पर उचित परामर्श व रख–रखाव न होना व उचित समय पर न भोजन करना, जिससे निदचर्या में भिन्नता उत्पन्न होने लगती है व मानव शरीर गंभीर व घातक व जालेवा बिमारियों को जन्म देती है। जिससे स्वास्थ्य पर भुरा प्रभाव पड़ने लगता है।

जिससे ज्ञात होता है कि पंच तत्वों से बना शरीर में O_2 (ऑक्सीजन) शरीर के सभी अंगो तक सही मात्रा में उपलब्ध न होने के कारण व किसी भी अंगों में चोट ग्रस्त व दवाईया का दुष्प्रभाव व खाद्य पदार्थो में मिलावट से दुष्प्रभाव द्वारा मानव शरीर की धमनी, शिराओ व त्वचा में जमाव व रूकावट पैदा होने लगती है जिससे शरीर

में विजातिय द्रव्यों की वृद्धि होने लगती है। व प्रतिरोधक क्षमता में कमी होने लगती है। व मुख्य रूप से रक्त का बहाव निरंतर न होना शरीर के किसी अंगों में व गठान बनना शुरू हो जाता है जिससे हमारे प्राकृतिक ऊर्जा शक्ति नष्ट होने लगती है। इससे शरीर में उपस्थित अंगो के साथ अन्य अंगो में गहरा प्रभाव होने लगता है जिससे घातक व असाध्य बिमारिया उत्पन्न होने लगती है।

MHRS का मानना है कि मानव शरीर में प्राकृतिक रूप से सक्षम व तीव्र प्रभाव शील चिकित्सा का भण्डार है जिससे ज्ञात होता है कि मानव शरीर को किसी भी बिमारी में दवाईयों की जरूरत नहीं होगी व **MHRS** चिकित्सा प्रणाली द्वारा प्रयोग कर शीघ्र ही लाभ पा सकते है।

इसी उद्देश्य की दृष्टि व अनुभव के आधार पर जनक स्वरूप ज्ञानी दास मानिकपुरी द्वारा सरल व सस्ती चिकित्सा का आयाम वर्तमान में भारत वर्ष में खोज हो चुकी है जिससे स्वास्थ्य चिकित्सा शिक्षा द्वारा सभी गरीब व निःशक्तजन व आम नागरिकों के स्वास्थ्य लाभ हेतु उच्च गुणवत्तायुक्त व हानी रहित चिकित्सा प्रद्धति वरदान स्वरूव मानव कल्याणार्थ हेतु अपनी सेवाएँ हेतु अपील की जाती है।

इस चिकित्सा में किसी भी बिमारियों की जांच व उपचार में दवाईयों व सर्जरी का उपयोग नहीं किया जाता, व भविष्य में होने वाली घातक व असाध्य बिमारियों की जानकारी क्षण भर में सिघ्र मिल जाती है आधुनिक उपकरणों द्वारा सरल व सस्ती सुविधाएँ आपकी छत्तीसगढ़ प्रान्त के अम्बिकापुर शहर में **MARYSC** (मानीकपुरी एक्यूप्रेशर रिसर्च एवं योगा साईंस सेन्टर पोस्ट ऑफिस रोड बिही बगीचा अम्बिकापुर में स्थित व पंजीकृत संस्थान **MAHE-S** (मानीकपुरी एक्यूप्रेशर हेल्थ एजुकेशन – सोसायटी) द्वारा समय–समय पर स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध की जाती है।

MHRS द्वारा भविष्य में होने वाली बिमारियों की सही जानकारी प्राप्त कर महंगी दवाई व सर्जरी से बचाया जाता है। यह कार्य प्रणाली संपूर्ण मानव शरीर में ऊर्जा संचार व रक्त शुद्धीकरण को नियमित प्राकृतिक रूप से बनाये रखने में अति–उत्तम व एक मात्र माध्यम संपूर्ण मानव जगत में कल्याणार्थ हेतु जानी जा रही है।

मानव शरीर की रहस्य क्या है ?

इसका तात्पर्य है कि मानव शरीर जीवित व कार्यरत कैसे रहती है जिसमें प्रकृति के मुल स्थाईत्व स्वरूप रहस्यो की अनुमानित जानकारी प्राप्त कर दैनिक जिवन व भविष्य में होने वाली सभी तथयात्मक गतिविधि कार्यो की नियमानुसार गहन पूर्वक अध्ययन कर उन अलोकिक क्रियाओं का अनुसरण कर व्यवहारिक जीवन में उत्तम व सहानुभूति पूर्वक मानव शरीर की आंतरिक व बाहृय गतिवियों को प्रमाणित तौर पर सामने लाना ही हमारी मुलभूत अवधारणाएँ व सफलता है जिससे मन, मस्तिस्क व आत्म शांति मिल सके व हमारी अनमोल जिवन पाप रहित व्यतित हो सके।

01. मानव शरीर अद्भूत है।

02. इसमें असंख्य आत्माए निहित है।

03. यह प्रकृति द्वारा नियंत्रीत होती है।

04. वायू, जल, अग्नि, आकाश, पृथ्वी इन सभी के अंश मानव शरीर में विद्यमान होते है जिससे प्रकृति पर प्रबल प्रभाव निस्तर बनी रहती है। व संतुलन बनी रहती है।

05. मस्तिष्क में अलौकिक शक्ति का स्थान होता है जहाँ से संपूर्ण मानव शरीर व अंगो में ऊर्जा संचार प्रवाहित होती है।

06. मानव शरीर में ऐसी माध्यम है जिससे कई वर्षो तक बिना अन्न व जल ग्रहण किये रहस्यमय शक्ति का प्रयोग करके ऋषि मुनियों तपस्या कर जीवन व्यतित किये है जिसका प्रमाण निहित है।

07. मानव शरीर के अंगो द्वारा छड़ भर में ही सिद्धि समाधान व उपाएँ व जानकारी प्राप्त होती है यहि रहस्यमय कथन है।

08. मन की बाते जानना व बताना दूसरो का यह भी रहस्यमय का प्रतिक है।

09. ऋतु चक्र परिवर्तन में मानव शरीर स्वयं ही अपनी अनुकुलन अतिसिघ्रता पूर्वक बना लेती है, यह रहस्यमय अवधारणाएँ है।

10. मानव शरीर में उत्पन्न हुई जठराग्नियों द्वारा ज्ञात होता है कि शरीर को उन आवश्यक भोज्य पदार्थो व वस्तुओं की सिघ्र आवश्यकता है जिसकी पुर्ती से स्वास्थय स्वच्छ व मन उत्तेजित होती है व स्फुर्ति बनी रहती है यह रहस्यमक इकाई है।

11. मानव शरीर कई श्रृखलाओ द्वारा निर्मित व संचालित है जिसमें सभी आवश्यक तत्वों, वस्तुओं की आवश्यकतानुसार मांग होती है यदि समय पर उपलब्धता में कमी व विलम्ब होने पर आंतरिक व बाह्य क्रियाएँ समान्य से असामान्य होती है व शरीर की प्रतिरोधकता में असंतुलन होने लगती है व साथ ही विकृतिया उत्पन्न होने लगती है। व सिघ्र ही घातक बिमारिया जन्म ले लेती है यह बहुत ही रोचक रहस्यमय अनुकुलन है जिस पर सिघ्र ही जानकारी होना जरूरी है।

12. मानव शरीर में समय व वाणी की विशेष महत्व है जैसे (1) समय निकल जाने के बाद वापिस कदाचित नहीं होती।

13. उसी तरह वाणी भी एक बार निकलने के बाद दूबारा वापिस नही जाती। यह दोनो शब्द बहुत ही रोचक व रहस्यमय होती है।

14. मन व आत्मा दोनो ही बदलते रहते है यह भी बहुत ही आश्चर्य चकित वाली बात है।

(01) मन – यह छड़ भर में ही इतनी दूरी तय कर लेती है जिसकी अनुमान लगाना मुस्किल ही नहीं नामुमकिन है।

(02) आत्मा – इसका तात्पर्य यह है कि मानव जीवन अनमोल व नस्वर है जिसे एक दिन जाना ही होगा अर्थात जन्म और मृत्यु पूर्व में ही निशचित है व आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर को धारण करती है जिसे पुनर्जन्म कहा जाता है। यह आत्मा – अजर, अमर, अनश्वर होती है यह बाते रहस्यमय ढंग से बताया गया है।

(03) शरीर – मानव शरीर को श्वास गिन कर मिला है तभी तो मृत्यु एक निश्चित समय पर आती है उस समय किसी का वश नहीं चलती, यह भी सोचनिय रहस्यमय अवधि प्रतित होती है।

मानव शरीर में ऊर्जा शक्ति विद्यमान होती है –

ऐसी मान्यता है कि मानव शरीर में ऐसी ऊर्जा शक्ति विद्यमान है जिससे सामान्यतः देखा गया है कि कई वर्षो तक व्यक्ति निरोगी जीवन व्यतित करते है जिससे ज्ञात होता है कि प्रकृति के साथ यदि हम सभी सकारात्मक कार्य का संचालन, उचित आहार–विहार व सामजस्य स्थापित करते हुए, प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए उपयोग करे व सावधानिया, रख–रखाव को ध्यान दे तो अवश्यक ही प्रकृति हमें प्यार करेगी व मानव शरीर में उपस्थित ऊर्जा का सही प्रयोग कर दिर्घायु जीवन व्यतित करेगा।

(1) सिघ्र सोचने की क्षमता में वृद्धि होगी।

(2) मन अति चंचल होगी।

(3) काल्पनिक द्वारा वर्तमान में वैज्ञानिक तर्क की दृष्टि से प्रमाणित कर उसे उसी रूप व आकृति प्रदान करती है।

(4) अनुभव के आधार पर नई–नई चुनौती भरी शोध कार्य द्वारा मानव जीवन को उपलब्ध कराती है जिससे हमें सभी प्रकार की सुविधाए व लाभ प्रकृति द्वारा मिलती है।

(5) आत्म बल से मनुष्य सभी कार्य करने में सक्षम व प्रबल सिद्ध होते है।

(6) आज हम जो भी भौतिक व प्रायोगिक दृष्टि से अपनी नग्न आखो से जो भी देखते है। मानव निर्मित ऊर्जा शक्ति की ही रूप व अंश होता है।

(7) मन, बुद्धि, आत्मा प्रकृति के करिब समन्वय स्थापित कर मानव जीवन को मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग प्रसस्थ करते है।

मानव शरीर चिकित्सा संसार –

इसका तात्पर्य है कि प्रकृति द्वारा सृष्टि निर्माण किया गया जिससे सभी प्रकार की रहस्यमय ढंग से आवश्यक पहलुओ पर गंभीरता पूर्वक गहन, मनन, चिन्तर, मंथन, निरूपण, नियम, ब्रह्मचर्या, परिग्रह, गृहणी, गृहणी जीवन, वेश–भूषा, भाषाएँ, क्रियाएँ, अवलोकन, अवधारणा, मनोविज्ञान, चेतना, संवर्धन, उपयोगीता, प्रमाणिक्ता, विकास निर्माण संरचनाएँ आकृति प्रदान, एक रूपमता, निश्चितता, समायोजन कार्मीक गतिविधिया, सहभागिता, व्यवहारिकता, सदाचार, वार्तालाप, वाणिक महत्वकाक्षाएँ शिक्षा ज्ञान चिकित्सा प्रणाली अन्य सभी संसारिक परिवर्तन नियम, ऋतु चक्र, प्रकृत घोतक, आपदाए, आलोकिक शक्तियों का प्रभाव मानव शरीर व जीवन पर रहस्यमय प्रभावशीलता, शारीरिक क्रियाकलाप, उपयोगिता आदि उन सभी समान पहलुओं पर गहन विचार विमर्श कर प्रकृति ने यह सभी सोचकर हमारे मानव जीवन को प्रकृति व पुरूष के अनुसार सृष्टि निर्माण में स्त्री व पुरूष की उत्पत्ति कर संसारिक जीवन निर्माण व उपयोगिता, विकास निर्वहन, जिम्मेदारी, भोग विलाश, पाप–पुण्य, लेखा–जोखा, आयु निर्धारण, जीवन शैली, पंच तत्वों से बना मानव शरीर निर्माण किया जिसमें सभी प्रकृति स्वरूप अंगो का निर्माण है सत्य पुरूष स्वरूप बिज (गुण) का निर्माण प्रक्रिया हेतु गर्भ का निर्माण विधि से संतान प्राप्ति को जन्म देने की रहस्यमय क्रियाएँ निरूपित किया गया जिससे हम सभी मानव संसारिक गुणसुत्रों से परिपूर्ण व अद्भुत जीवन को प्राप्त कर दैनिक जीवन निर्वहन करने योग्य बनाया गया है।

जिसमें ऐसी मान्यता है कि यदि सभी तत्वों की उपलब्धता हमें प्रकृति द्वारा आवश्यकतानुसार मिलता रहे तो यह जीव आत्मा शांत रहेगी व मन प्रसन्न व चंचलता निरंतर बनी रहेगी व जीवन दिर्घायू होगी।

यदि इस क्रियाओं में किसी भी तत्वों की प्रचुर मात्रा में हमें समय पर उपलब्धता न हो तो शरीर के आंतरिक व बाह्य गतिविधियों, क्रियाओं में असंतुलन होगी व समान्य से कम या ज्यादा होना ही नई व घातक बिमारी को जन्म देगी।

मानव शरीर में एक रहस्यमय बात है कि प्रकृति द्वारा निर्मित मानव शरीर में पंच तत्वों के साथ–साथ कई मूलभूत अवधारणाएँ व उपयोगी, अनमोल वस्तु हमारे मानव शरीर में रक्त (ब्लड) है। जो संपूर्ण शरीर में निरंतर गतिमान पाया जाता है। जिससे मानव शरीर जीवित है इसके बिना जीवन संभव नहीं है जिससे ज्ञात होता है कि आज तक वैज्ञानिक तथ्य दृष्टि से रक्त निर्माण निर्मित करने का कोई भी आयाम व माध्यम नहीं बन पाया यह प्रकृति की रहस्यमय गतिविधिया है जो अद्भुत है।

यदि इसकी उपलब्धता मानव शरीर में व निर्माण, रक्त संचार आदि में किसी भी प्रकार की कमी या रूकावटे आने पर उस स्थान के साथ–साथ संबंधित अंगो में गहरा प्रभाव व शारीरिक कष्ट, बिमारीया उत्पन्न होने लगती है जिससे भविष्य में जन–धन, शारीरिक, मानसिक, आर्थिक स्थिति गंभीर व सोचनिय होने लगती है हमें इस पर विशेष ध्यान व उपाय का मार्ग प्रसस्थ करना चाहिए जो मानव शरीर के अंगों को दुष्प्रभाव से बचाया जा सके। इस उद्देश्य से मानव स्वास्थ्य कल्याण हेतु **MHRS** की रहस्यमय प्रभावशील प्रणालियों की शैक्षणिक प्रशिक्षण व जानकारी लेना अनिवार्य है जिससे शीघ्र ही आपातकालीन परिस्थितियों में शीघ्र स्वास्थ्य लाभ व सामाधान हो सके।

यह चिकित्सा प्रणाली उच्च गुणवत्ता युक्त व हानी रहीत चिकित्सा है इसका स्वास्थ्य, शिक्षा, शिघ्र ही राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय व अधिनस्थ महाविद्यालयों तक शीघ्र ही पहुँचाई जा रही है व **MHRS** शिक्षा प्राप्त की योग्यता या पात्रता कॉन्सील बोर्ड द्वारा पंजीकृत चिकित्सक विशेषज्ञो को होगी। जिससे भविष्य में दवाओं की दुषपरिणाम एवं सर्जरियों में सुधार व शीघ्र लाभकारी हेतु प्रयास की जा रही है। जिससे मानव शरीर में उत्पन हुई बिमारियों की उचित जांच परामर्श व सेवाएँ मील सके। अधिक जानकारी के लिए **www.gdmmhrs.com** से जानकारी प्राप्त कर सकते है।

यह चिकित्सा शोध कार्य द्वारा प्रमाणित किया गया है जो मानव शरीर की रहस्यमय व भविष्य में चिकित्सा के क्षेत्र में चमात्कारी प्रभाव प्राप्त होगी व आम नागरिकों व निराश रोगियों के लिए वरदान स्वरूप कारगर सिद्ध होगी।

मानव शरीर में असंख्य आत्माएँ विद्यमान होती है –

इसका तात्पर्य है कि मानव शरीर पंच तत्वो से बना है जिससे ज्ञात होता है कि यह एक अद्भुत श्रृखलानुसार व्यवस्थित रूप से सभी कार्यो का संचालन, नियंत्रण, उत्सर्जन, विकास, क्रियाएँ व अन्य सभी तथ्यों का उत्सर्जन नियमानुसार लगातार प्राकृतिक रूप से होती रहती है जिसमें **MHRS** द्वारा शोध कार्य से जांच होती है कि जब मानव शरीर में से किसी एक हिस्सा या बिन्दु में हलचल उत्पन्न होने से संपूर्ण शरीर में शीघ्र ही संकुचन–सिथिलन, उत्सर्जन, सूचनाओं का आदान–प्रदान व अन्य सभी कार्यो मे प्रकृति द्वारा ऊर्जा शक्ति उत्पन्न होने लगती है जिससे ज्ञात होता है कि मानव शरीर में उपस्थित सभी कोशिकाओं, उत्तको, अंगो, व संरचनाओं द्वारा कार्यरत सभी अंगो में प्रभावशील कार्य होने लगते है व शरीर की आंतरिक व बाह्य क्रियाएँ निरंतर बनी रहती है इसमें असंख्य जीव आत्माएँ सुक्ष्मदर्शी द्वारा देखी जा सकती है व **RBC** (120 दिन की जीवन चक्र), **WBC** (7 दिन की जीवन चक्र), निर्माण कार्य होने की पुष्टि होती है वैज्ञानिक तर्क की दृष्टि से उसे असंख्य आत्माएँ कहा जा सकता है। जिनके बिना मानव शरीर का अस्तित्व ही नहीं रहेगा।

जैसे – शरीर निर्माण चक्र प्रकृति द्वारा –

कोशिकाएँ → उत्तको → अंगो → संरचनाओ → आकृति (मानव शरीर निर्मित)

(1) मानव शरीर में अनके कोशिकाएँ पायी जाती है जो अपनी–अपनी विशेष कार्य व भूमिकाएँ निभाती है।

(2) वीर्य (शुक्राणुओ) की संख्या लाखो में होती है तभी भ्रूण निर्माण में सहायक होती है जिसमें **DNA, RNA** अनुवासिक गुणसूत्र पाये जाते है।

(3) मानव शरीर में कोशिकाओं का जीवन चक्र निहित होती है व पुनः निर्माण की प्रक्रिया होती रहती है।

(4) मस्तिष्क में कई असंख्य टिसू सेल पाई जाती है जो मस्तिष्क के सभी कार्यो व गतिविधियों में सहभागिता निर्मित व सभी कार्य सुचारू रूप से नियंत्रित व संचालित होती है।

(5) मानव शरीर कोशिकाओं में माइट्रोकाण्ड्रीया पाई जाती है जिसमें **ATP** (एडीमोसीन ट्राई फास्फेट) पाया जाता है जिसमें ऊर्जा संचित रहती है व आवश्यकतानुसार ऊर्जा का उपयोग शरीर में होती रहती है। माइट्रोकाण्ड्रीया को कोशिका का पावर हाऊस कहा जाता है।

(6) मानव शरीर में आत्मा सतपुरूष (परंब्रम्ह) स्वरूप विद्यमान होते है। जिसके द्वारा मानव शरीर जीवीत रहती है व जिस दिन आत्मा मानव शरीर से बाहर निकलती है उसी छड़ मृत्यु निश्चित होती है आत्मा अजर, अमर, अविनाशी व अनश्वर होती है यह पुनर्जन्म अनुसार शरीर धारण करती रहती है। आध्यात्मिक दृष्टि से ज्ञात होता है।

मानव शरीर क्षमता ऋतुचक्रानुसार :– इसका तात्पर्य है कि मानव शरीर असंख्या ऐसी श्रृंखलाओं से निर्मित व चलायमान है जिसकी अध्ययन करना असंभव है। **MHRS** द्वारा विद्यार्थी की स्वास्थ्य चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में सहायतानुसार अध्ययन हेतु जिससे मानव शरीर के प्राकृति प्रदन्त अंगो की गतिविधियों व क्रियाओं की शीघ्र जानकारी प्राप्त करने की उत्तम व सरल माध्यम व उच्च गुणवत्ता युक्त तकनीक के द्वारा जागरूक्ता व स्वास्थ्य लाभ के क्षेत्र में नया आयाम के रूप में यह अनमोल कार्य कर स्वास्थ्य लाभ सभी नागरिको तक पहुँचे व विश्व स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में अहम भूमिका व लोकप्रियता मिलता रहे।

ज्ञात है कि प्रकृति द्वारा अद्भूत रूप से ऐसी युक्तिया पूर्व में निरूपित व अभिव्यक्त किया गया है जिससे विधि का विधान कहा जाता है।

जैसे –

(1) समय चक्र लगातार गतिशिल है जो आज तक नहीं रूका और न ही किसी ने प्रमाणित वैज्ञानिक तर्क की दृष्टि से कर पाये।

(2) ऋतु चक्र समयानुसार बदलाव व कर्वट लेती रहती है –

- प्रकृति द्वारा मुख्य रूप से तीन ऋतु है – ग्रीष्म, वर्षा, सरद व हेमंत व शिशिर ऋतु को प्राकृति अनुसार माना गया है।
- पेड़ पौधो में फल–फुल लगना नियमानुसार समयावधी में ही होती है यह ऋतु चक्र के द्वारा होती है।
- फसल उगाना कार्य भी ऋतुचक्र अनुसार होती है।
- आज वैज्ञानिक विधि द्वारा किसी भी समय हाइब्रेड बिजो का रासायनिक विधियों द्वारा उगाया जाता है जो जानलेवा व घातक होता है।
- सूर्य प्रकाश की ऊर्जा से पेड़ पौधे अपना भोजन प्राप्त करते है।
- बीटामीन 'डी' सूर्य के प्रकाश से मिलती है यह रहस्यमय बात है।
- रात–दिन, सुबह–शाम व दोपहर में सभी प्रकृति चक्र की ही देन है। जिनका अलग–अलग महत्व है।
- स्त्रीयों में मासिक धर्मचक्र पाई जाती है जो प्रतिमाह निश्चित समय पर ही होती है स्वस्थ्य शरीर में।
- **M.C.** चक्र निर्धारित उम्र में ही शुरू होती है यह रहस्यमय है।
- गर्भधारण तिथि व गर्भ अवधि 9 माह यह क्रियाएँ प्रकृति चक्र अनुसार होती है।
- लड़का–लड़की जन्म भी प्रकृति की चक्र अनुसार ही होती है।
- मासिक चक्र के बाद ही गर्भधारण्रा सम्भव होती है यह भी ऋतु चक्र पर आधारित होती है व शिशु जन्म प्रकृति रहस्यमय है।
- पेड़–पौधों में नर और मादा की प्रकृति पाई जाती है।
- सभी जीव प्रार्णियो व वनस्पतियों में ऋतु चक्र पाया जाता है।

- जानवरों में भी छः माह व एक वर्ष में ही गर्भधारण की प्रकृति पाई जाती है। व ब्रम्हचर्य पालन प्रधान होता है यह भी रहस्यमय है।

तपस्वी दीर्घायू क्यो होते है –

इसका तात्पर्य है कि तपस्वी अपनी जीवन शैली आहार, विहार,ब्रम्हचर्य पालन, वायुमण्डलीय ऊर्जा का प्रयोग करना, शरीर शुद्धिकरण क्रियाएँ फलाहार भोजन व लक्ष्य की एकाग्रता, धैर्यता का पालन, मोह माया बंधन से मुक्त परिवारिक चिन्ता से मुक्त व अपनी मूलभूत उद्देश्यों की पूर्ति हेतु तत्पर पर तटस्थ रहना प्राकृतिक दोहन न करना व प्रकृति के नियमों का आदर सत्कार व पालन करना, जिससे उसकी उसकी रोम–रोम में ईश्वरी भक्ति भावनाओं से शरीर में पॉजेटिव ऊर्जा उत्पन्न होना जिससे अपने आप में समर्थता, संतुलन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है जिससे सत्य वचन, मधुर वाणी संस्कारी जीवन यापन, सेवा भावनाएँ मानव जीवन व्यतित करना जिससे लोगों में आत्म समर्पण व विश्वास बड़ता है जिससे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर व आंतरिक व बाह्य रूप से शरीर को सुडौल व ऊर्जावान स्फुर्ती बना लेते है व प्रकृति से घनिष्ठता बना लेते है, जिससे तन–मन, बुद्धि चिन्त, व आत्मा शांति की अनुभूति प्राप्त होती है। जिससे वैज्ञानिक तर्क की दृष्टि से संपूर्ण अंग को अलौकिक ऊर्जा प्रदान होती रहती है व तपस्वी दिर्घायु को प्राप्त कर लेते है व अच्छे कर्म से तपस्वी समाधी में लिन होकर अस्टांग योग मेडिटेशन का प्रयोग कर मोक्ष मार्ग प्रसस्थ कर लेते है।

जैसे –

(1) तपस्वी को एकाग्रता का परिचालक माना जाता है।

(2) ब्रम्हचर्य पालन से दीर्घायु होते है।

(3) प्रकृति दोहन व उल्लंघन किये बिना जीवन ऊर्जावान होती है।

(4) प्रकृति के रहस्य अनुसार वनस्पतियों में संपूर्ण भोज्य पदार्थ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती है।

(5) शुद्ध वातावरण से आयु बड़ती है।

(6) मन मस्तिष्क स्वच्छ व साफ रखने से शारीरिक ऊर्जा विधि व आयु बढ़ती है।

(7) वायु मण्डलीय ऊर्जा का प्रयोग विधिज्ञान प्राप्त होने पर कई वर्षो तक बिना भोजन किये बिना जीवन व ऊर्जावान शरीर रहस्यमय निरोगी रहते है।

(8) उचित आहार विहार से भी आयु बढ़ती है।

(9) प्राकृतिक भोजन व शुद्ध शाकाहारी भोजन उत्तम माना जाता है व लाभकारी होती है व आयु बढ़ती है।

ऋषिमुनियों व तपस्वीयों को प्राकृतिक प्रदन्त ऊर्जा प्राप्ति मार्ग क्या है –

इसका अर्थ है कि मानव शरीर व जीवन सभी को एक समान मिलती है परंतु किसी को आयु कम और ज्यादा क्यो होती है। इस शब्दार्थिक अर्थ की दृष्टि से हम कर्म काण्डो, धर्म, सम्प्रदाय, ब्रम्हचर्य पालन, प्राकृति से निकटता व एकाग्रता बनाये रखना व मुख्य उद्देश्यों की प्राप्ति कर अपना सफलता हासिल करना तपस्वी का मुख्य उद्देश्य होती है। यह कार्य प्राकृतिक वायुमण्डलीय रहस्यमय ऊर्जावान की देन के कारण ही संभव होती है, जिसे हम शक्ति कहते है।

शक्ति का तात्पर्य उन तमाम ऊर्जाओं के भंडार से है जो सभी वन्य या जीव प्राणियों को प्रतिदिन लगातार निरंतर मिलती रहती है इसे प्रकृति शक्ति कहते है। यह अद्भूत प्रकृति की चमत्कार है जिसकी रहस्य बताना मुश्कील है।

इसे प्रकृति की प्रेम स्वरूप वरदान मानना अति उत्तम होगा जो अनमोल होती है जिसकी कोई किमत चुकाया नहीं जा सकता।

ऋषिमुनियों के द्वारा दी गयी ज्ञान के बारे में मुझे अपनी बुद्धि व अनुभव क्षमता की दृष्टि से अवलोकन व कल्पना भी नहीं कर सकता। उन्होंने अपनी तपस्या व मेहतन से मानव जीवन को धन्य करते हुए संपूर्ण संप्रदाय व जगत में पहचान दिये व शिक्षा ज्ञान की दृष्टि से हम सभी के आँखे खोले व मुक्ति के मार्ग प्रसस्थ की रास्ता सतकर्म व अस्टांग योग मेरिटेशन को बताया गया है।

MHRS द्वारा मानना है कि मनुष्य अपनी कर्तव्य निष्ठा पूर्वक लगन, मनन चिनत्न सदाचार, व्यवहार, संस्कार व गुणो द्वारा अच्छे कर्म करके भी मोक्ष प्राप्ति व सतपुरूष के निज घर को जा सकता है व जन्म मृत्यु बंधन, मोह–माया व पुनर्जन्म से मुक्ति पा सकता है।

यदि प्रकृति की यर्थात शक्ति जिस मनुष्य व प्राणी को एक अंश भी प्राप्त हो जाए तो वह धन्य हो जाएगा।

(1) ज्ञात है कि पूर्व में कई हजारो वर्ष ऋषि मुनियों ने मानव जीवन महत्वपूर्ण योगदान दिये है जिसका प्रमाण आज भी मिल रहा है वैज्ञानिक दृष्टि से यह कार्य प्रकृति शक्ति के द्वारा ही संभव है।

(2) ऋषिमुनिया ने अपनी एकाग्रता के कारण प्रकृति की शक्ति को पहचाना व समयानुसार अपनी पहचान बनायी। यह कार्य शक्ति द्वारा ही संभव हुआ।

(3) पूर्व ऋषिमुनियों, महर्षियों, गुरूवों द्वारा श्राप दिये जाने से मनुष्य प्राणि अभिशाप के जंजीर में बंध जाता रहा व एक दिन उसे भुगतना ही पड़ता था।

(4) राजा दशरथ को भी श्रवण की हत्या के अभिशाप में पुत्र विलोप के रूप में मिला था जिससे राम भगवान जन्म का कारण बना व वनवाश के समय राजा दशरथ ने पुत्र माया में अपनी प्राण त्याग दिया यह त्रेता युग की बात है जिसका प्रमाण भी आज तक मिलता है।

(5) ऋषिमुनियों को दिव्य शक्ति व ज्ञान प्राप्त होती थी, जिससे घर बैठे वे सभी घटनाओं की भविष्यवाणी प्राप्त कर लेते थे।

(6) हजारो वर्ष पूर्व युद्ध में रहस्यमय शक्तियों का प्रदर्शन होता रहा जैसे – अग्नि बाण, वर्षा, बाण, मायावी शक्तियों का प्रमाण गीता व महाभारण में विद्यमान है।

MHRS द्वारा आध्यात्मिक दृष्टि से मानव शरीर रहस्य –

इसका तात्पर्य है कि अद्भूत मानव शरीर संरचनाओं में विभिन्न प्रकार की रहस्यमय प्रवृति पायी जाती है जिसकी अवलोकन व काल्पिनिक आधार पर समझाने का प्रयास किया जा रहा है जो **MHRS** से ज्ञात होता है कि यह मानव शरीर ही सृष्टि स्वरूप है हम सभी को सृष्टि स्वरूप मानव शरीर की गहन अध्ययन पर विशेष बल देना होगा। ताकि चिकित्सा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में अपनी विशेष योगदान बरदान स्वरूप साबित हो सके।

ज्ञात है कि मानव शरीर पंच तत्वों से बनी है व सभी कार्य विधि विधान अनुसार पूर्व में ही घोषणा प्रकृति द्वारा हो चुका है सिर्फ इंतजार उस घड़ी (समय) की जिससे कब, कहा, कैसे, किस रूप में मिलना व सहयोग करना निर्धारित है। बाकि सब हवस व बहाना होती है।

आपने पढ़ा व सुना होगा मानव हृदय की धड़कन लगातार क्यो होती रहती है। क्यो जरूरत पड़ी यह रहस्यमय बात है। इसे अन्यथा न ले यही प्रकृति है जो स्वतः चलाएमान होती है और कहा जाता है कि मुझे दिल से आभास हुआ कि कुछ अभी मुझे मिलने ही वाले है जिसका चाहत मुझे कई दिनों व वर्षो से थी या आभाष दिल से की कुछ अनहोनी हो सकती है। यही भाव यथा सिघ्र कहा से आया यह भी रहस्य की बात है सब पूर्व में ही लिखा गया है कि दोस्तो मै अनुभूव व धार्मिक दृष्टि से परिचित हूँ उपरोक्त वार्तानुसार मुझे अपने बारे में कुछ भी समझ नहीं आता बस मुझमें कुछ भी अच्छा कार्य कर जाने की चाहत पैदा दिल से हो जाती है यही प्रकृति का फल सभी को मिलता रहे यही दिल से दुआ व छोटो को आशिर्वाद, बड़ो को प्यार भरा बन्दगी।

मुझे लगता है कि मानव जीवन कई हजारो लाखों वर्षो बाद कई योनियों व जीव, जन्तुओं की जीवन व्यतित व जन्म मरण के बाद ही अच्छे कर्म के लिए मानव जीवन मिला है इसे हम सभी व्यर्थ में न गवाए आप सभी से जो बन सके अच्छा करने को प्रोत्साहित लाने का प्रयास करे व व्यस्त जीवन में भी कुछ समय दूसरो के लिए निकाले ताकी मन में शान्ति की अनुभूति प्राप्त होगी।

कहा गया है विश्व कल्याण भावना रखे ताकि उसमें छुपी ही रहस्यमय कल्याण सभी के साथ–साथ स्वयं को भी प्राप्त होगी। ऐसा माना गया है। यही सच्चाई है।

जैसे –

''जीन्दा शरीर पानी में डुबता

और मृत शरीर पानी के उपर तैरता है।''

''कर भला सो हो भला,

करा बुरा सो हो बुरा।''

इसका शब्दार्थिक अर्थ है कि यदि हम सभी अपने मन, बुद्धि, चिन्त, आत्मा लगन से किसी छोटी से छोटी कार्य को कर्तव्य निष्ठा पूर्वक निः स्वार्थ भावना से किया गया कर्म के फल की चिन्ता किये बिना कार्य करना चाहिए ताकि आप सभी बुजुर्गो, गुरूवों व माता–पिता व अपनो का प्यार मिलता रहे व मानव जीवन धन्य हो सके व वर्तमान में किया गया कार्य ही भुतकाल से गुजरता हुआ भविष्य काल तक पहुचता है यह रहस्यमय भावना को प्रकट करता है।

जैसे दादा–परदादा व माता–पिता द्वारा किया गया कार्य की पुण्यफल पुत्र–पुत्री को मिलता है प्रकृति द्वारा समय अनुसार फल की प्राप्ति निश्चित ही मिलती है किसी भी व्यक्ति या प्राणियों की फल उधार स्वरूप प्रकृति नहीं रखती है। एक दिन अवश्य ही आपको शुद्ध ब्याज सहित वापस लौटाती है।

कहा जाता है जब भला–बुरा समय आता व चला जाता है उस समय को महसुस करके जरा सोचो कि साथ क्या लेकर जाना है सबकुछ यहा ही रहेगा सिर्फ व सिर्फ अपके कर्म व पुण्य ही आपके साथ जायेगा।

जैसे –

''मुट्ठी बाधकर आना है,

हाथ खोलकर जाना है।''

दूसरे शब्दों में कहा जाता है कि जैसी करनी वैसे भरनी अर्थात सच्चाई सामने एक दिन जरूर आएगी। इसी को कहा गया है –

''साप भी मर गयी

और लाठी भी नहीं टुटी''

(1) कहा जाता है कि उपर वाले की लाठी की आवाज नहीं होती। यही रहस्यमय है।

(2) समय से पहले या किस्मत से ज्यादा कुछ भी नहीं मिलता।

(3) विधि का विधान नहीं टलता यह पूर्व में निर्धारित हो चुकी होती है।

परिभाषा :–

मन

इसका तात्पर्य है कि मन ऐसा युक्ति है जो बिना किसी भी मार्ग (रास्ता) के कही भी आना–जाना क्षण भर समय में ही कर लेती है यह अनौखी चिज है मानव शरीर भी प्रकृति द्वारा अनमोल व अद्‌भूत है जिसकी कथनी व करनी की अनुमान लगाना व कल्पना करना, नामुम्किन है, यह जो चाहे जो करादे, चाहे अच्छा व बुरा यह बहुत ही प्रभावशाली व चमत्कारी होता है इसे किसी भी यंत्रों द्वारा नहीं देखा व छुआ नहीं जा सकता, इसे अनुभव किया जाता है इसी को मन कहते है।

जैसे –

''मन लागा मेरो यार फकिरी में''

''तन लागा मेरो यार गरिबी में''

''धन लागा मेरो यार बिमारी में''

''चिन्त लागा मेरो यार चतुराई में''

''अहंकार लागा मेरो यार बिखारी में''

''आत्मा लागा मेरो यार शरीर में''

''बुद्धि लागा मेरो यार कमाई में''

''ज्ञान लागा मेरो यार सफाई देने में''

''भक्ति लागा मेरो यार भलाई में''

''शक्ति लागा मेरो यार संसार में''

MHRS द्वारा मन को काबु करने का एक मात्र माध्यम माना गया है।

तन

इइसका तात्पर्य है कि यदि हम तन से स्वस्थ्य व स्वच्छ रहेंगे तभी अपनी दैनिक कार्यो व परिवारिक भरण पोषण व भौतिक उपयोगी वस्तुओं व भोज्य पदार्थो की पूर्ति हेतु कमाई कर आर्थिक स्थिति को अनुकुलन बनाने में सफलता प्राप्त कर सकते है व ऐसी लत व आदत न बनाये जो शारीरिक कष्ट घातक सिद्ध हो व हानी पहुचे मन मस्तिक सूचारू रूप से क्रियाशिल होगा व तन में स्फुर्ती व ऊर्जा बनी रहेगी जिससे कार्य क्षमता प्रबल होगी व निरोगी काया बनी रहेगी इसी को तन कहते है।

कहा गया है –

''तन से बड़ा धन नहीं होता

तन तो अनमोल होता है।''

MHRS द्वारा तन स्वस्थ्य रहा तो लाखो धन कमाई जा सकती है इसीलिए हमें तन को हमेसा ध्यान में रख–रखाव स्वयं करनी चाहिए। ताकि तन दिर्घायु हो सके

जैसे –

''सुन्दर व सुडौल तन सबको भावे।''

धन

इसका तात्पर्य है कि आज यह सबसे बड़ा स्थान बना रखा है। यह जो चाहे वह करा दे। इसलिए कहा जाता है –

''धन धान्य है।''

अर्थात यह चारो तरफ आगे, पिछे, बाया, दाया, उपर, निचे हर तरफ से इनसन को घेरा हुआ है व आज विशेष स्थान रखा है जिसके बिना विकास में रूकावटे आ जाती है चाहे देश की हो या एक परिवार की। आज इसके बिना मनुष्य एक कदम भी चल नहीं पा सकता है।

जैसे –

(1) धन से अहंकार व्यक्ति अपने आप को भुल गया है।

(2) माता–पिता, भाई–बहन, रिश्तेदारी सभी को भुला दिया है।

(3) महगाई ने सभी को अपाहिज कर दिया।

इसका कारण व दुषप्रभाव :–

* आज दंगे, अपराध, धार्मिक विविधताए, सामाजिक कुरूतिया व अपमान व शोषण को जन्म दे रहा है।

* स्वार्थ की भावना में प्रतिदिन वृद्धि हो रही है।

MHRS द्वारा सरल व चिकित्सा प्रणाली है जिसमें धन की अहंकार को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिकाए निभा रही है।

ज्ञान

इसका तात्पर्य है कि **MHRS** प्रणाली द्वारा शिक्षा, ज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। जिससे प्रशिक्षित चिकित्सक विशेषज्ञों को उनकी आवश्यकता अनुसार आधुनिक शिक्षा द्वारा मानव शरीर में उत्पन्न हुई विकृतियों की शिघ्र जानकारी प्राप्त कर भविष्य में होने वाली घातक व जानलेवा बिमारियों व सर्जरी से रोगियों को बचाया जा रहा है, जिससे वर्षो पिड़ित व असाध्य व निराश रोगी शिघ्र ही स्वास्थ्य लाभ ले रहे है।

MHRS जनक **GD** मानिकपुरी द्वारा कई हजारो रोगी वर्दान स्वरूप विगत 15 वर्षो से स्वास्थ्य लाभ ले रहे है आपके छत्तीसगढ़ प्रान्त के अम्बिकापुर शहर में अपनी सेवाएँ दे रहे है।

कहा गया है –

''ज्ञान बाटने से ज्ञान की वृद्धि होती है

ज्ञान बाटने से ज्ञान की कमी नहीं होती''

शक्ति

MHRS द्वारा ज्ञात होता है कि मानव मस्तिष्क में ऐसी शक्ति विद्यमान होती है जो मध्य मस्तिष्क के इन्टर मेडियट लोब्स से संपूर्ण शरीर में अलौकिक शक्ति का संचार व नियंत्रण प्रकृति द्वारा होती है जो रहस्य वाली बात है इसे जानने के लिए अनुभव व काल्पनिक दृष्टि से समझने का प्रयास किया जा रहा है।

(1) मानव शरीर सृष्टि का ही दूसरा स्वरूप है जो निरंतर चलायेमान रहती है।

जैसे – मस्तिष्क में

– ह्रदय गती व धड़कन में

– गुर्दे के अंगों में

– यकृत के अंगो में

– सेन्शरी आर्गन व अन्य में

(2) सोचने समझने की क्षमता में शीघ्रता होती है।

(3) मानव शरीर ऐरियल की भाति कार्य करती है जिससे ज्ञात होता है कि चालु रेडियों को छुने से आवाज साफ सुनाई पड़ती है।

(4) मानव शरीर में प्रति सेकेण्ड 8000 से भी ज्यादा चुम्बकिय तरंग दैर्ध्य निकलती है।

(5) पृथ्वी में गुरूत्वाकर्षक शक्ति पाया जाता है जिसे चुम्बकिय शक्ति कहा जाता है।

(6) चुम्बक शक्ति बिना किसी भी यंत्र या तकनीक नहीं कार्य कर सकते है।

(7) चुम्बक शक्ति के अभाव में मानव शरीर की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

(8) जहा चुम्बकीय शक्ति कम होती है वहा किसी भी बड़ी वस्तुओं की वजन शुन्य हो जाती है।

मानव शरीर चिकित्सा संसार

MHRS (Mid Head Root Solution)

01. मानव शरीर में उत्पन्न हुई विकृतियों या बिमारियों की जांच परामर्श सेवाएँ आधुनिक चिकित्सा उपकरणो द्वारा उपलब्ध।

02. आम नागरिको व निराश रोगियों हेतु उच्च गुणवत्ता युक्त हानी रहित चिकित्सा **MHRS** द्वारा स्वास्थ्य सेवाए उपलब्ध।

03. **MHRS** द्वारा भविष्य में होने वाली बिमारियों, महगी दवाईयो व सर्जरी से बचाने का एक मात्र साधन के रूप में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिघ्र ही विश्वसनीय प्रसिद्धिया प्राप्त हो रही है।

04. आम नागरिक के स्वास्थ्य लाभ हेतु नई पहल इस प्रकार से है।

05. प्राकृतिक प्रदन्त मानव शरीर द्वारा शिघ्र स्वास्थ्य लाभ के चमत्कारी प्रभाव।